RESEARCH PAPER | Geography | Volume : 5 | Issue : 8 | August 2015 | ISSN - 2249-555X

ग्वारपाठा : एक बहुआयामी प्राकृतिक वरदान (एक औषधीय कृषि के रूप में)

Gvarpatha : Ek Bahuayami Prakrutik Vardaan (Ek Aushadhiy Krushi Ke Roop Me)

KEYWORDS

ABHISHEK SARASWAT

Research Scholar, Geography, Maharani Laxmibai Shashakiya Utkrusht Mahavidhyalay, Gwaliyar.

ग्वारपाठा एक बहुवर्षीय एवं बहुपयोगी औषधीय पौधा है। ग्वारपाठा उन सस्ते परंतु महत्वपूर्ण पौधों में से है, जिनका औषधीय एवं सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माण में सदियों से उपयोग होता आ रहा है। इस संबंध में कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी उल्लेख मिलता है यूनान वासियों को इसका ज्ञान चार सौ ईसवी पूर्व से था। जिसके साक्ष्य दीसकूरीदूस में मिलता है।

ग्वारपाठा की उत्पति पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रिका में मानी गई है। लेकिन यह भारत में सोलहवीं सदी से उत्पादित हो रहा है। अत्यधिक आसानी से पनपने वाला यह पौधा यूँ तो प्राकृतिक अवस्था में काफी स्थानों पर उगा हुआ देखा जा सकता है। परंतु औषधीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कई क्षेत्रों में व्यवसाय कृषिकरण भी प्रारंभ हो चुका है। वर्तमान में भारत के राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, आंद्रप्रदेश, गुजरात तथा अन्य कई राज्यों में इसकी काफी बड़े पैमाने पर खेती प्रारंभ हो चुकी है।

ग्वारपाठे की खेती की विधि –

ग्वारपाठा एक ऐसा औषधीय पौधा है। जिसके द्वारा कई प्रकार के सौन्दर्य प्रसाधनों एवं औषधियों का उत्पादन हो रहा है। लेकिन इसके सफल उत्पादन हेतु सही कृषि तकनीकि का ध्यान रखना आवश्यक है। आज ग्वारपाठे की बड़े एवं व्यावसायिक स्तर पर खेती की आवश्यकता महसूस होने लगी है। राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, आंद्रप्रदेश तथा गुजरात के कई क्षेत्रों में काफी बड़े पैमाने पर इसकी खेती प्रारंभ हो चुकी है। इन क्षेत्रों में हो रहे इसके कृषि करण के आधार पर ग्वारपाठा की खेती की उपर्युक्त विधि को निम्नानुसार देखा जा सकता है।

जलवायु – ग्वारपाठे के सफल उत्पादन हेतु उष्ण कटिबंधीय जलवायु की आवश्यकता होती है। वैसे इसे उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु में भी उगाया जा सकता है।

मृदा – ग्वारपाठा वैसे तो कई प्रकार की मृदाओं में उग सकता है परंतु इसके सफल उत्पादन हेतु उचित जल निकास वाली रेतीली दोमट मृदा सर्वोत्तम मानी जाती है। वैसे बेकार पड़ी भूमि में भी यह उग सकता है।

खाद एवं उर्वरक – ग्वारपाठे के सफल उत्पादन हेतु भूमि में उचित मात्रा में नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा पोटाश को समय – समय पर मिलाना चाहिए। इसी के साथ यदि गोबर की खाद को यहि खेत में डाला जाता है। तो वह सोने पर सुहागा का कार्य करेगी।

सिंचाई – ग्वारपाठे की खेती सिंचित व असिंचित दोंनों प्रकार से की जा सकती है। आमतौर पर वर्षा नियमित रूप से होती रहे तो इसे सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। परंतु लंबी अवधि तक वर्षा न हो तो आवश्यकता अनुसार सिंचाई करनी चाहिए।

उपरोक्त विधि को ध्यान में रखकर कृषि कार्य किया जाए तो उत्पादन अधिक होगा।

ग्वारपाठे के औशधीय उपयोग –

विभिन्न औषधीय कार्यो हेतु ग्वारपाठा का उपयोग जितना परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों तथा घरेलू उपचारों में किया जाता रहा है। उतना ही आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों में भी हो रहा है। नीलगिरि के कोटा आदिवासी लोग इसके गूदे का उपयोग जोड़ों के दर्द के इलाज हेतु करते है। वहीं मध्यप्रदेश के गौंड आदिवासी समुदाय के लोग इसका उपयोग जख्मों के उपचार हेतु करते है। बच्चों की ऑतों में कीड़ों के उपचार हेतु भी इसका उपयोग किया जाता है। उपरोक्त के अतिरिक्त जिन अन्य प्रमुख विकारों के निदान में भी यह उपयोगी पाया जाता है वह निम्नानुसार है।

खूनी अतिसार के उपचार में।

मुँहासे तथा फोड़े फुन्सियों के उपचार में।

कब्जी तथा गैस की परेशानी में।

सूजन होने पर।

हड्डी के दर्द में।

पेट में अल्सर आदि होने पर।

यकृत को मजबूती देने में।

जहाँ तक आधुनिक चिकित्सा पद्धति में ग्वारपाठा का प्रश्न है तो कई आधुनिक चिकित्सकों द्वारा इसका बखूबी उपयोग किया जा रहा है। वर्तमान परीक्षणों में यह पाया गया है कि ग्वारपाठे में मधुमेह नाशी गुण पाये जाते हैं इसी प्रकार ग्वारपाठे में बाल दोबारा उगाने सम्बन्धी गुणों की जानकारी भी प्राप्त हुई है।

उपरोक्तानुसार देखा जा सकता है कि ग्वारपाठा काफी अधिक औषधीय उपयोग का पौधा है जिसका आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों में भी उतना ही महत्व है जितना परम्परागत चिकित्सा में था। आज यह विशेष रूप से सौंदर्य प्रसाधनों, पेट सम्बन्धी विकारों, कफ विकार, जोड़ों के दर्द आदि रोगों के उपचारों में इसकी उपयोगिता निरंतर बढ़ती जा रही है। तथा अच्छी गुणवत्ता के ग्वारपाठा की प्राप्ति की दृष्टि से इसका कृषिकरण आज आवश्यकता बन चुका है।

REFERENCE

1. जययाल, डॉ. गुरपाल सिंह (2006), औषधीय पौधों की व्यवहारिक खेती, इन्डियन सोसायटी ऑफ एग्री प्रोफेशनल, नई दिल्ली। | 2. सैनी, गंगाशरण (2009), औषधीय फसलों की उत्पादन प्रौद्योगिकी, रामा पब्लिकेशन हाउस, मेरठ। | 3. खन्ना, डी.आर. (2007), औषधीय पादप संरक्षण एवं संवर्धन, दया पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली। | 4. शुक्ला, डॉ. अभिषेक (2007), वन संरक्षण एवं औषधीय पादप, दया पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।